HISTORY

B.A.(Hon's)PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 07

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें 👇👇👇

https://youtu.be/w8KkiijYKNg

✓✓प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग- 4)

✓वैदिक स्रोत (महाकाव्य ग्रंथ और पुराण....)

प्राचीन भारतीय इतिहास के वैदिक स्रोत के अन्तर्गत सूत्रसाहित्य, स्मृतिग्रंथों, महाकाव्य ग्रंथों और पुराणों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

@ महाकाव्य

* रामायण और महाभारत भारत के 2 सर्वाधिक प्राचीन महाकाव्य है|

@ रामायण

* रामायण को भारत का आदि महाकाव्य कहा गया है|

* रामायण की रचना बाल्मीकि जी ने पहली एवं दूसरी शताब्दी में संस्कृत भाषा में की थी

* कात्यायन पुत्र महावीभाषा के अनुसार प्रथम या द्वितीय शताब्दी में रामायण में केवल 12000 श्लोक थे * वर्तमान में रामायण में 24000 श्लोक या पद हैं|

* रामायण में 24000 श्लोक होने के कारण रामायण को चतुर्विंशति सहस्त्राणि संहिता भी कहा जाता है|

* वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण सात कांडों में बटा है|

* भुशुण्डि रामायण को आदी रामायण कहा जाता है|

* राम कथा पर आधारित ग्रंथों का अनुवाद सर्वप्रथम भारत से बाहर चीन में किया गया|

* रामायण के किष्किंधा कांड में शकों और यवनों के नगरों का उल्लेख भी मिलता है।

* दक्षिण के वैजयंतपुर का भी उल्लेख मिलता है।

द्रविड़ मलय दक्षिण के रीति-रिवाज, यवद्वीप(जावा) सुवर्णद्वीप (सुमात्रा) आदि बहुत सारी बातों का उल्लेख भी रामायण में मिलता है।

@ महाभारत

* महाभारत विश्व का सबसे लंबा एवं वृहद महाकाव्य है।

* महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास थे।

* महाभारत की रचना काल 500 ई.पू. से 500 ई. तक था।

* महाभारत की रचना करने में लगभग 1000 वर्ष लगे।

* महाभारत में कुल 18 पर्व हैं।

* महाभारत महाकाव्य 18 पर्वों में विभाजित है जो इस प्रकार है -आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शांतिपर्व, अनुशासनपर्व, अश्वमेधपर्व, आश्रमवासीपर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानिकपर्व एवं स्वर्णरोहन पर्व आदि।

* महाभारत में सभी पर्वों सहित कुल 1948 अध्याय हैं।

* महाभारत में मूल रूप से 8800 श्लोक थे, जिसे "यव संहिता" कहते थे| इनका अर्थ था "विजय संबंधी संचयन"|

* जब श्लोकों की संख्या 24000 हुई, तब इसका नाम "भारत" हो गया|

* जब महाभारत में श्लोकों की संख्या (100217) श्लोक हुई, तब यह "महाभारत" या "शस्त्र सहस्त्र" संहिता बना।

* महाभारत के छठे पर्व (भीष्म पर्व) में ही भागवतगीता का उल्लेख मिलता है।

* भागवत गीता में ही सर्वप्रथम अवतारवाद का उल्लेख मिलता है|

* महाभारत का प्रारंभिक उल्लेख अश्वलायन गृह्यसूत्र में मिलता है।

@ पुराण.....

* प्राचीन आख्यानों से युक्त ग्रंथ को पुराण कहते हैं|

* पुराणों की रचना गुप्त वंश अर्थात पाचवी से चौथी शताब्दी के मध्य हुआ।

* पुराणों के मुख्य रूप से पांच लक्षण बताए गए हैं|

ये हैं - सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वंतर तथा वंशनुचरित्।

* कुल पुराणों की संख्या 18 है|

* ये इस प्रकार है - ब्रह्मपुराण, पदम, विष्णु, शिव, भगवत, नारदीय, मारकंडेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कुर्म, मत्स्य, गरुड़ एवं ब्रह्मांड पुराण।

* इन पुराणों में विष्णु पुराण मत्स्य पुराण वायु पुराण कथा भागवत पुराण सर्वाधिक ऐतिहासिक महत्व के हैं।

* 18 पुराणों में सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रमाणित पुराण मत्स्य पुराण है।

* मत्स्यपुराण से सातवाहन वंश के विषय में जानकारी मिलती है।

* विष्णु पुराण से मौर्य वंश के विषय में जानकारी मिलती है।

* वायु पुराण से गुप्त वंश की जानकारी मिलती है।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!